International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'संस्कृत वाङ्मय में निहित नैतिक मूल्य'

(देश की उन्नति के परिप्रेक्ष्य में)

डॉ. वन्दना सूरज भान

एसोसिएट प्रोफेसर

लेडी श्रीराम महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

मोबाइल नं. ९९१०४७४७३७

ई–मेल –vandanasbhan@lsr.du.ac.in

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'संस्कृत वाङ्मय में निहित नैतिक मूल्य'

(देश की उन्नति के परिप्रेक्ष्य में)

आज सम्पूर्ण विश्व प्रगति तथा उन्नति के नवीन शिखर को छूने की दिशा में अग्रसर है। विज्ञान तथा तकनीकी के क्षेत्र में उत्तरोत्तर नूतन अनुसंधान, यातायात तथा दूरसंचार के साधनों में अप्रतिम विकास के साथ-साथ औद्योगिकीकरण, आर्थिक क्षेत्र में नवीन प्रयोग, शिक्षा पद्धति में आमूलचूल परिवर्तन आदि के कारण गत कुछ दशकों में हमारी जीवनशैली में आए क्रान्तिकारी परिवर्तन सर्वविदित हैं। इस पर सोने पर सुहागा यह कि मनुष्य अपनी विचारशीलता तथा विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति के बल पर आज उपलब्ध संसाधनों तथा सुविधाओं का अधिकाधिक लाभ उठाने को तत्पर है।

वस्तुतः किसी भी देश की सर्वविध उन्नति तथा विकास में उस देश की भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक सम्पदा एवं संसाधन, जलवायु आदि महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त उस देश की राजनैतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था भी विशिष्ट महत्त्व रखती है क्योंकि उसी के माध्यम से उपलब्ध संसाधनों का सदुपयोग तथा विभिन्न योजनाओं का निरूपण एवं क्रियान्वयन किया जाता है, जिससे प्रत्येक देशवासी उनसे लाभान्वित हो सके। इस दृष्टि से हमारे देश के प्रसंग में उपर्युक्त तत्त्वों का महत्त्व और भी बढ़ जाता है। हमारे देश में भौगोलिक विविधता के साथ-साथ सांस्कृतिक एवं जनसांख्यिकीय विविधता भी पाई जाती है। ऋतुओं के वैविध्य तथा प्राकृतिक सम्पदाओं के भण्डार से भरपूर भारत को कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था क्योंकि प्राचीन काल में यह अत्यन्त धनधान्य सम्पन्न, समृद्ध एवं एक सुदृढ़ व शक्तिशाली सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था से युक्त देश था। इसकी तुलना में देश की वर्तमान स्थिति अधिक सन्तोषजनक नहीं कही जा सकती।

देश की वर्तमान सामाजिक स्थिति को देखें तो समाज में अनेक बुराइयाँ शनैः शनैः अपने पाँव जमा रही हैं।इसका प्रमाण आए दिन समाचारपत्रों एवं दूरदर्शन के माध्यम से मिलता रहता है। नित नए-नए अपराध मन को व्यथित एवं विचलित कर जाते हैं। दूसरी ओर देश की आर्थिक व्यवस्था भी अत्यन्त चिन्ताजनक है। एक नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार देश की २९.५% जनसंख्या अभी भी गरीबी रेखा से नीचे रह रही है। इसके अतिरिक्त संसाधनों का समुचित प्रयोग न किया जाना, कृषि पर निर्भरता, आय के वितरण में असमानता, बेरोजगारी, मानव विकास का निम्न स्तर, धनी तथा निर्धन वर्ग में अत्यधिक अन्तर का होना - अन्य अनेक विचारणीय बिन्दु हैं, जो इस कटु सत्य की ओर स्पष्ट संकेत करते हैं कि अभी भी देश उन्नति के अपने निर्धारित लक्ष्य से कहीं दूर ही स्थित है। इस विषय में अर्थशास्त्र में प्रचलित एक अन्य उक्ति उल्लेखनीय है -India is a rich country inhabited by poor people.

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उपर्युक्त स्थिति किसी भी प्रबुद्ध व्यक्ति को यह सोचने पर बाध्य कर देती है कि क्या कारण है कि प्राकृतिक सम्पदा तथा संसाधनों की प्रचुरता होने के बावजूद हम आज भी विकसित के स्थान पर विकासशील देश के रूप में जाने जाते हैं। वास्तव में किसी भी व्यवस्था की मूल ईकाई है – व्यक्ति, जो कि सामूहिक रूप से कार्य करते हुए समाज एवं देश की प्रगति में सहयोग प्रदान करता है। लोगों की चिन्तनशैली, कार्यप्रणाली, मानसिकता आदि किसी भी कार्य को सफल अथवा असफल बनाने में पर्याप्त सक्षम होते हैं। इस प्रसंग में संस्कृत वाङ्मय पर दृष्टिपात करने स ज्ञात होता है कि वैदिक काल से ही हमारे ऋषियों एवं मनीषियों द्वारा राष्ट्र के प्रति जागरूकता के विषय में विचार-मन्थन किया जाने लगा था। वेदों में स्थान-स्थान पर ऐसे तथ्य उपलब्ध होते हैं जो व्यक्ति को सर्वदा आदर्श मानसिकता एवं व्यवहार से युक्त होने की प्रेरणा देते हैं, ताकि वह मानवजाति के सर्वतोमुखी कल्याण एवं समृद्धि में सहायक हो सके। लोगों को सम्मिलित रूप से राष्ट्रोन्नति की दिशा में प्रयत्नशील रहने की प्रेरणा दी गई है –

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः।[1]

किसी भी समाज की मूल ईकाई परिवार है। पारस्परिक प्रेम, सामंजस्य एवं सौहार्द से युक्त वातावरण व्यक्ति को मन, वचन तथा कर्म से पवित्र एवं सन्तुष्ट बनाता है तथा वह ईमानदारी से अपना कार्य करता हुआ एक आदर्श परिवार, सुव्यवस्थित समाज तथा अन्ततोगत्वा एक उन्नत देश के निर्माण में सहायक होता है। वेदों में सम्पूर्ण जनसमूह में प्रेम होने की प्रार्थना की गई है –

इह रतिरिह रमध्वम्।[2]

इसी प्रकार ईश्वर से शुभवृत्तियाँ प्राप्त करने की प्रार्थना की गई है –

शिवा अस्मभ्यं जातवेदो नियच्छ।[3]

शुद्ध आचरण के लिए सुविचारों की उपादेयता का वैदिक ऋषि भली भाँति जानते थे। इसलिए शुभ विचारों से युक्त होने की प्रार्थना भी उपलब्ध होती है –

सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा सं शिवेन।[4]

---

1 यजुर्वेद ९.२३
2 यजुर्वेद ८.५१
3 अथर्ववेद ७.११५.३
4 यजुर्वेद १७.६७

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ध्यातव्य है कि वेदों में व्यक्तिगत नहीं अपितु सामूहिक कल्याण हेतु मङ्गलकामनाएँ प्राप्त होती हैं। सबके लिए मांगलिक शब्द सुनने तथा मंगल देखने की निःस्वार्थ पवित्र कामना की गई है –

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।[5]

देश की समुचित सुरक्षा एवं विकास के लिए जनमानस में एकता का होना अत्यावश्यक है, एतद्विषयक अत्यन्त सुन्दर दृष्टान्त मिलता है –

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।[6]

परवर्ती साहित्य में श्रीमद्भगवद्गीता में मानसिक तप का विवेचन करते समय अन्तःकरण की स्वच्छता तथा आत्मविनिग्रह पर बल दिया गया है –

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।

भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते।।[7]

वैदिक काल से ही सत्य एवं मधुर वाणी के महत्त्व को भी स्वीकार किया जाता रहा ह। ''सत्यं वद, धर्मं चर'' सदृश आदर्श वाक्यों के द्वारा व्यक्ति को सत्य के मार्ग पर चलकर जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा मिलती है। वेदों में सत्य की नाव द्वारा ही भवसागर को पार करना संभव कहा गया है –

सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्।[8]

सत्य-पालन को मनुष्य का सर्वोच्च कर्त्तव्य कहा गया है –

सत्यं चर्तं च चक्षुषी।[9]

ऋतं पिपर्त्यनृतं निपाति।[10]

---

5 यजुर्वेद २५.२१
6 ऋग्वेद १०.१९१.२-४
7 भगवद्गीता ७.१६
8 ऋग्वेद ९.७३.१
9 अथर्ववेद ९.५.२१
10 अथर्ववेद ९.१०.१३

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सत्यं वक्ष्यामि नानृतम्।[11]

अथर्ववेद में राष्ट्रभूमि को सुरक्षित एवं उन्नत बनाने के लिए ८ धारक तत्त्वों का उल्लेख किया गया है जिसमें सत्य को सर्वप्रथम स्थान दिया गया है –

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।[12]

वैदिक ऋषियों की तो यहाँ तक मान्यता थी कि सत्य के बल पर ही भूमि टिकी हुई है –

सत्येनोत्तभिता भूमिः सूर्येणोत्तभिता द्यौः।[13]

सत्य के द्वारा व्यक्ति की प्रत्येक कष्ट से रक्षा होती है –

सा मा सत्योक्तिः परिपातु विश्वतः।[14]

तदनन्तर उपनिषदों में सत्य वचन को सर्वदा विजयी होने वाला तथा सब कामनाओं की पूर्ति करने वाला कहा गया है –

सत्यं जयते नानृतम्

सत्येन पन्था विवतो देवयानः।

येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा

यत्र तत् सत्यस्य परम निधानम्।[15]

सत्य की महिमा के प्रतिष्ठापक उपर्युक्त मन्त्र के प्रथम वाक्य को हमारे देश के राष्ट्रीय चिन्ह – अशोक चक्र के नीचे राष्ट्रीय वाक्य (National Motto) के रूप में लिखा गया है। तदनन्तर स्मृति ग्रन्थों में भी मनुष्य को सर्वदा सत्य एवं प्रिय वाणी बोलने की प्रेरणा दी गई है –

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयान्नब्रूयात् सत्यमप्रियम्।

---

[11] अथर्ववेद ४.९.६

[12] अथर्ववेद १२.१.१

[13] अथर्ववेद १४.१.२

[14] ऋग्वेद १०.३७.२

[15] मुण्डकोपनिषद् ३.१.६

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पियञ्च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः।[16]

महर्षि पतञ्जलि ने योग के आठ अङ्गों का निरूपण करते समय प्रथम अङ्ग 'यम' के अन्तर्गत आने वाल पाँच तत्त्वों में सत्य को विशिष्ट स्थान दिया है –

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः।[17]

सत्य तो यह है कि सत्य की महिमा का संक्षेपेण बखान करना अत्यन्त कठिन कार्य है। सत्य का पालन करके व्यक्ति अपने जीवन में किसी भी स्थान, स्थिति अथवा समय में निराशा अथवा असफलता का सामना नहीं करता।

भारतीय संस्कृति में कर्म के सिद्धान्त को भी एकस्वर से महत्ता प्रदान की गई है। संस्कृत वाङ्मय का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि वैदिक काल में ही मनीषिगण कर्म की महिमा से भलीभाँति परिचित थे। वेदों में सबको कर्मशील बने रहकर जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी गई है। इस जगत् में सबकुछ कर्म से ही सम्भव है –

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरः।।[18]

इसी प्रकार भगवद्गीता में व्यक्ति के निरन्तर कर्मशील होने का प्रतिपादन किया गया है –

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।

कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।।[19]

कर्मविषयक अन्य विशिष्ट मान्यता यह है कि बिना कर्म किए भाग्य भी नहीं फलता तथा व्यक्ति को अपने किए कर्म के अनुसार उसका शुभ अथवा अशुभ फल भी भोगना पड़ता है। अतः व्यक्ति को सर्वदा सत्कर्म करने में ही तत्पर होना चाहिए तथा दुष्कर्मों का परिहार करना चाहिए। इस प्रकार वह अपने तथा अन्य सभी के लिए सुखमय जीवन का मार्ग प्रशस्त करने में सफल होगा। भगवद्गीता में निष्काम कर्म करने का उपदेश देकर श्रीकृष्ण ने हमें शान्त एवं तनावरहित जीवन जीने का मूलमन्त्र पदान किया है –

---

16 मनुस्मृति ४.१३८

17 पातञ्जलयोगदर्शनम् २.३०

18 यजुर्वेद ४०.२

19 भगवद्गीता ३.५

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।[20]

वस्तुत: इस संसार में हम सभी जो भी कर्म करते हैं वे मुख्यत: हमारे जीवनयापन एवं जीविकोपार्जन के लिए होते हैं। चूंकि जीवन को सुविधाजनक बनाने के लिए धन की आवश्यकता होती है, अत: धनार्जन हम सबका मूलभूत उद्देश्य होता है। किन्तु समस्या वहाँ उत्पन्न होती है, जब व्यक्ति केवल धन को ही प्राथमिकता प्रदान करने लगता है तथा लोभ एवं स्वार्थ के वशीभूत होकर उचित अनुचित ढंग से धन प्राप्ति में संलग्न हो जाता है। इस विषय में वेदों में अनेक मन्त्र उपलब्ध होते हैं, जहाँ व्यक्ति को लोभ रहित होकर कर्म करने की प्रेरणा दी गई है –

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा: मा गृध: कस्यस्विद्धनम्।।[21]

एक स्थान पर व्यक्ति को उदार हृदय बनने की प्रेरणा देने वाला मूलमन्त्र भी मिलता है –

शहस्त समाहर, सहस्त्रहस्त संकिर।[22]

इसी प्रकार उचित कार्यों द्वारा अर्जित धन को ही भोगने तथा अनुचित धन का परित्याग करने का निर्देश भी दिया गया है –

रमन्तां पुण्या लक्ष्मी: या: पापीस्ता अनीनशम्।[23]

एक अन्य मन्त्र के द्वारा स्पष्ट होता है कि वेदों में सामुदायिक आर्थिक सम्पन्नता की कामना की गई है –

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्।[24]

अभिप्राय है कि व्यक्ति ऐसे कार्य न करे कि स्वयं तो ऐश्वायवान् बन जाए किन्तु दूसरे लोग जीवन की मूलभूत सुविधाओं तक से वञ्चित रहें। लोभराहित्य का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण नचिकेता के प्रसंग द्वारा

[20] भगवद्गीता २.४७
[21] यजुर्वेद ४०.१
[22] अथर्ववेद ३.१४.५
[23] अथर्ववेद ७.११४.४
[24] यजुर्वेद ७.४३

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मिलता है, जब यम द्वारा प्रस्तावित सांसारिक उपभोग रूपी प्रलोभनों को नचिकेता अत्यन्त बुद्धिमत्तापूर्वक अस्वीकार कर देता है। उसका विवेकपूर्ण कथन द्रष्टव्य है –

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः।[25]

इसी प्रकार ऋग्वेद के अक्षसूक्त में जुए जैसे अनुचित माध्यम से धनार्जन न करके सकारात्मक परिश्रम द्वारा जीवनयापन करने का अतीव प्रभावशाली सन्देश दिया गया है –

अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।[26]

वेदों में निषेधात्मक विधि से भी व्यक्ति को सत्कर्म करने का निर्देश प्राप्त होता है। अग्नि को सम्बोधित एक मन्त्र में सात मर्यादाओं का उल्लेख ह –

सप्तमर्यादाः कवयस्ततक्षुः।[27]

निरुक्त (६.२७) में ये सात निषिद्ध कर्म इस प्रकार गिनाए गए हैं – चोरी, व्यभिचार, ब्रह्महत्या, मद्यपान, पुनः पुनः दुष्कर्म, गर्भपात तथा पाप करके झूठ बोलना।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि संस्कृत वाङ्मय में मानव जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए धर्म-अधर्म कर्तव्य-अकर्तव्य, उपादेय-हेय आदि सभी विषयों का विशद निरूपण उपलब्ध होता है। आवश्यकता है इन आदर्शों एवं नैतिक मूल्यों को गम्भीरतापूर्वक जीवन में आत्मसात् करने की। आज स्थिति यह है कि देश में आए दिन किसी न किसी स्तर पर, कोई न कोई समस्या उजागर होती ही रहती है। आर्थिक, राजनैतिक, प्रशासनिक अथवा सामाजिक – कोई भी क्षेत्र अनियमितताओं तथा अव्यवस्था से पूर्णतया मुक्त नहीं है। देश में व्याप्त महंगाई, भ्रष्टाचार, जमाखोरी, बेरोज़गारी, गरीबी जैसी गम्भीर समस्याएँ एक ओर सामान्य जीवन को दूभर तो बना ही रही हैं, वहीं दूसरी ओर देश की सर्वतोमुखी उन्नति के मार्ग में विकट बाधा के रूप में भी स्थित हैं। वस्तुतः इनका समाधान तभी सम्भव हो पाएगा जब मानवमात्र की मानसिकता, विचारशैली तथा कार्यप्रणाली में परिवर्तन लाया जाए तथा देश के गौरवपूर्ण इतिहास एवं गरिमामयी संस्कृति से प्रेरणा लेकर एक उज्जवल भविष्य की दिशा में कार्य किया जाए। व्यक्ति का निश्छल मन, सत्य एवं मधुर वाणी तथा सकारात्मक कर्म – ये सभी एक सशक्त व्यक्तित्व,

[25] कठोपनिषद् १.१.२७
[26] ऋग्वेद १०.३४.१३
[27] ऋग्वेद १०.५.६

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सुदृढ़ समाज एवं समृद्ध देश का निर्माण करने में पर्याप्त समर्थ उपाय हैं। अतः अपने पूर्वज मनीषियों के द्वारा प्रशस्त किए गए मार्ग को अपनाकर हमें अपने जीवन को सफल बनाने का प्रयास करना चाहिए।

डॉ. वन्दना एस. भान

असिस्टेंट प्रोफेसर

लेडी श्रीराम महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

मोबाइल नं. ९९१०४७४७३७

ई–मेल –vandana_19@live.com

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 10, October 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ सूची

- अथर्ववेद संहिता – प्रकाशक – मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, १९६२
- एकादशोपनिषद् – डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, विजयकृष्ण लखनपाल, नई दिल्ली
- ऋग्वेद संहिता – मोतीलाल बनारसीदास, ओरियन्टल पब्लिशर्स, सईद मीठा, लाहौर, १९४०
- गीता में आत्मप्रबन्धन – डॉ. विनोद कुमार, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, २०१२
- पातञ्जलयोगदर्शनम् – डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, २०१२
- मनुस्मृति – पं. रामेश्वर भट्ट, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, २००३
- यजुर्वेद संहिता – परिमल प्रकाशन, दिल्ली, १९९७
- वेद अवगाहन – मनोहर विद्यालंकार, सुनोति प्रकाशन, दिल्ली, २००९
- वेदों में भारतीय संस्कृति – पं. आद्यादत्त ठाकुर, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, जयपुर
- वेदों में राष्ट्र का स्वरूप – डॉ. जातवेद त्रिपाठी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, २०१३
- वैदिक साहित्य और संस्कृति – डॉ. उदयनाथ झा अशोक, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, २०१३
- श्रीमद्भगवद्गीता,यथारूप–श्रीभक्तिवेदान्तस्वामीप्रभुपाद,भक्तिवेदान्तबुकट्रस्ट,मुम्बई,२०१४

INTERNET SOURCES

- sanskritdocuments.org
- Wikipedia, The Free Encyclopedia
- www.google.co.in
- zeenews.india.com